द्वितीयक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Secondary Group)

द्वितीयक समूह प्राथमिक समूह के विपरीत है। इसमें न तो घनिष्ठता होती है, न व्यक्तिगत संबंध, न तो सुख-दुख में सहभागिता होती है और न ही अपनापन। इन समूहों से सभी अपने स्वार्थ की अधिकतम पूर्ति में लगे होते हैं। इसमें मैं की भावना की प्रधानता होती है। किसी किसी से मतलब नहीं होता, हर एक नाप-तौलकर नियमानुसार व्यवहार करते हैं। ऐसे समूहों में व्यक्ति के व्यवहार हार्दिक व आंतरिक नहीं होते। इसी सन्दर्भ में द्वितीयक समूहों को 'शीत जगत का प्रतिनिधि' कहा जाता है।

किंग्सले डेविस :—

"द्वितीयक समूह को सामान्यतः रूप प्राथमिक समूह के विपरीत समूह के रूप में परिभाषित किया है।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह के विपरीत विशेषता वाले समूह द्वितीयक समूह हैं।

ऑगबर्न और निमकॉफ :—

"वे समूह जो घनिष्ठता की कमी का अनुभव करते हैं, द्वितीयक समूह कहे जाते हैं।"

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि द्वितीयक समूह में घनिष्ठता की कमी होती है।

बीयरस्टेड :—

"प्राथमिक समूह व्यक्तिगत समूह है द्वितीयक समूह अवैयक्तिक। पहले के सदस्यों के बीच व्यक्तिगत संबंध होते हैं और दूसरे के सदस्यों के बीच प्रतिनिधि संबंध होते हैं।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि - द्वितीयक समूह अवैयक्तिक होते हैं। इनके सदस्यों का एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप में जानना कठिन है। इनके सदस्यों में प्रतिनि

संबंध पाये जाते है। इनमें पद व हैसियत के अनुसार संबंध बनते है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्वितीयक समूह व्यक्तियों का एक ऐसा बड़ा संगठन है जिसमें अवैयक्तिक संबंध सीमित सहयोग में की भावना, व्यक्तियों के बीच संस्तरण व व्यक्तिगत स्वार्थों की प्रधानता होती है। राजनीतिक दल विभिन्न संघ, व्यापारिक प्रतिष्ठान चुनाव समिति आदि इसके महत्वपूर्ण उदाहरण है।

कूले के अनुसार द्वितीयक समूह संबंधो में स्थायीत्व की कमी संबंधो मे छिछलापन होता है। उचित इसमें संबंधो का उतना महत्व नहीं होता है। लोग ऐसे समूह में स्वार्थवश जुड़ते है। अतः स्वाभाविक रूप से इस समूह में लोगों के बीच भावात्मक - संवेगात्मक लगाव की कमी होती है।

स्टीवन कोल —

"द्वितीयक समूह वे है जो अपेक्षाकृत काफी बड़े होते है एवं उनमें पाये जानेवाले संबंध काफी अवैयक्तिक होते है।

गिडेन्स —

"यह व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिसके अन्तर्गत लोग नियमित रूप से मिलते है, लेकिन उनके संबंध मुख्य रूप से अवैयक्तिक है। व्यक्तियों के बीच संबंध गाढ़े नहीं होते है। लोग सामान्यतः एक दूसरे के निकट तभी आते है जब उनके सामने कोई निश्चित लाभदायक उद्देश्य होता है।"